॥ ओ३म् ॥
वेद प्रचार, विश्व शान्ति, राष्ट्रोत्थान एवं सम्पूर्ण क्रान्ति के लिये समर्पित पाक्षिक पत्र

आर्य नीति

कृण्वन्तो विश्वमार्यम

पाक्षिक

वर्ष : 19 अंक : 7 10 अप्रेल 2019 मूल्य एक प्रति : 3 रुपये डाक पंजियन संख्या : Jaipur City/264/2018-20 वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

सत्यव्रत सामवेदी की काश्मीर की पूर्व सीएम महबूबा मुफ्ती को चेतावनी

महबूबा! समझ जाओ, नहीं तो मिट जाओगे

-सत्यव्रत सामवेदी

जयपुर 09 अप्रैल। भाजपा के संकल्प पत्र के बहाने जम्मू कश्मीर की पूर्व सीएम महबूबा मुफ्ती ने देश विरोधी बयान दिये। कहा कि भाजपा अनुच्छेद 370 हटाने की बात कर रही है अगर यह हुआ तो हम चुनाव के हक से वंचित हो जाएंगे। ना समझोगे तो मिट जाओगे हिन्दुस्तान वालों, तुम्हारी दास्तान भी न होगी न होगी दास्तानों में।

नेशनल कान्फ्रेंस के अध्यक्ष फारूख अब्दुल्ला ने कहा कि अनुच्छेद 370 खत्म होने से जम्मू कश्मीर आजाद हो जाएगा। भाजपा को दिलों को जोड़ने की कोशिश करनी चाहिए, ना कि उन्हें तोड़ने की।

सामवेदी ने महबूबा को पत्र लिखकर कहा कि तुम्हारे देश विरोधी बयान पढ़कर प्रत्येक भारतवासी विक्षुब्ध है और तुम्हारे अस्तित्व को समाप्त करने के लिए कटिबद्ध है। तुम्हारा बयान देश विरोधी है और यह देश के साथ गद्दारी है। धारा 370 के कारण काश्मीर में शांति बहाल क्यों नहीं हुई। पिछले तीन दशकों में ही 41 हजार काश्मीरी मारे गए।

महबूबा जी! आपको मालूम होना चाहिए कि मुसलमानों में आतंकवाद की जड़ संविधान के अस्थाई धारा 370 है। पं. नेहरू ने शेख अब्दुल्ला के आग्रह पर यह धारा स्वीकार की थी। शेख अब्दुल्ला ने यह भी कहा था कि वे केन्द्रीय सरकार पर भरोसा नहीं कर सकते क्योंकि उसमें हिन्दुओं का बहुमत होगा, अत: काश्मीर को एक विशेष दर्जा दिया जाए। उसका अपना झण्डा, सदर-ए-रियासत और संविधान हो। इस प्रस्ताव का संविधान सभा ने विरोध किया था किन्तु नेहरू के दिए वचन के कारण यह स्वीकार कर लिया गया। बाद में गोपालस्वामी ने कहा था कि यह धारा अस्थाई है और इसे शीघ्र ही निरस्त कर दिया जाएगा।

धारा 370 को नही हटाया गया इसीलिए 1947 से काश्मीर जल रहा है और इसे नरक बना दिया गया है। आपके पिताजी कितने देशभक्त थे यह पूरा देश जानता है।

मैं भाजपा का न तो समर्थक हूँ और न अनुयायी हूँ परंतु नरेन्द्र मोदी की इस घोषणा से सारे भारत में हर्ष की लहर दौड़ गई है कि धारा 370 हटाएंगे। यह घोषणा मोदी ने भाजपा के संकल्प पत्र में की है। भारतवर्ष के समस्त राजनीतिक दलों ने मुसलमानों के वोट लेने के लिए धारा 370 को समाप्त नहीं होने दिया।

यह आश्चर्य की बात है कि एक स्वतंत्र देश में दूसरा स्वतंत्र देश है। किसी राष्ट्र के दो प्रधानमंत्री भी होते हैं? क्या किसी राष्ट्र में किसी राज्य को अपना संविधान बनाने की छूट दी गई है? क्या किसी भी स्वतंत्र राष्ट्र में किसी राज्य का अपना अलग झण्डा होता है? यह मूर्खता की पराकाष्ठा है कि विस्थापित नागरिक सांसद बन सकते हैं विधायक नहीं। क्योंकि उन्हें अगर विधायक चुनने की अनुमति दी जाए तो महबूबा मुफ्ती और फारूख विधायक या मुख्यमंत्री कैसे बन सकते हैं। महबूबा जी! आपको इतिहास का पता नहीं। आपको यह भी नही मालूम कि भारतवर्ष के सारे राजनेता धारा 370 के बारे में क्या विचार रखते हैं। सन् 1964 की संसद की बहस में जो 10 घंटों से अधिक चली, सभी ने स्पष्ट रूप से 370 की धारा को अस्थाई माना और यह विचार व्यक्त किया कि इसी धारा के कारण इंसानियत की हत्या हो रही है। यह कहा का न्याय है कि काश्मीर के स्थाई निवासी को जमीन, रोजगार आदि देने का अधिकार वहां की विधानसभा को है। यह प्रावधान इसलिए रखा गया कि देश के गद्दारों को तो एक वोट देने का अधिकार मिले और जो देशभक्त है उन्हें वोट नहीं देने दिया जाए।

महबूबा जी क्या आप इस बात से वाकिफ नहीं है कि 370 के प्रावधान में स्पष्ट कहा गया था कि जैसे ही जम्मू काश्मीर का संविधान बनाने वाली समिति अपना कार्य शुरू करेगी धारा 370 हट जाएगी। इस समिति को संविधान तथा विलय संबंधी धारा तय करनी थी। अपना कार्य पूरा करके संविधान समिति 1953 में भंग हो गई और उसके साथ धारा 370 भी स्वत: समाप्त हो जाती है। भारतवर्ष इस बात को कैसे मंजूर करेगा कि बांग्लादेश से जो मुस्लिम आये वे तो नागरिक बन सकते हैं लेकिन भारत के लोग जम्मू काश्मीर में नहीं बस सकते। अब भारतवासी या भारत के मतदाता यह सहन करने के लिए तैयार नहीं है कि भारत का कोई भी कानून जम्मू काश्मीर में तभी लागू होगा जब वहां की विधानसभा उसे पारित कर देगी।

क्या यह शर्म की बात नहीं है कि धारा 370 के कारण काश्मीर की सरकारों ने और आप जैसे सिर से लेकर पांव तक साम्प्रदायिकता में डूबे हुए राजनीतिज्ञों ने लाखों पंडितों को काश्मीर से निकाल दिया। पंडितों के परिवारों की महिलाओं का अपहरण किया गया, उनके बच्चों का कत्लेआम किया गया। क्या यही इंसानियत है। भारतवर्ष यह कब तक बर्दाश्त करता रहेगा।

अब भारतवासी यह मानता है कि 1947 के बाद से आज तक साँपों को दूध पिलाया है। भारतवर्ष धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है और काश्मीर साम्प्रदायिकता ग्रस्त राज्य है। धर्म के आधार पर गठित पाकिस्तान को यह सहन नहीं कि मुस्लिम बहुल काश्मीर भारत में रहे। इसीलिए पाकिस्तान की सेना पाकिस्तान में साम्प्रदायिकता का उन्माद बढ़ाती रहती है और आतंकवादियों को मदद देकर भारतीय सेना पर हमला करती है। आपका भी आतंकवादियों ने अपहरण किया था। क्या आप यह हादसा भूल गई हैं। आप धारा 370 हटाने के लिये जो बयान दे रही है ये साम्प्रदायिक ताकतों को खुश करने के लिए एवं आतंकवादियों के डर से।

आप स्वशासन की बात करती हैं। पाकिस्तान घाटी से सेना हटाने की मांग दोहराता रहता है ताकि वह बेरोकटोक काश्मीर पर अपना हमला जारी रखे। आप आर्म्ड फोर्सेस स्पेशल पावर एक्ट को समाप्त करने का मुद्दा उठाती रहती हैं। इसमें प्रावधान है कि किसी सैनिक के विरुद्ध अभियोग चलाने से पूर्व केन्द्र सरकार से स्वीकृति आवश्यक है। यदि यह एक्ट हटा दिया जाता है तो हरेक सैनिक के विरुद्ध अभियोग प्रारंभ हो सकता है।

पाकिस्तान के नौजवान सेना पर पत्थर क्यों फेंकते हैं। भारत सरकार काश्मीर के विकास पर अरबों रुपया खर्च कर चुकी है परंतु काश्मीर के कृतघ्नी छात्र भारत के

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सृष्टि नव संवतसर पर आर्य समाज आदर्श नगर जयपुर में विशाल आयोजन

नया वर्ष हिन्दुओं का ही नहीं मानव जाति का नया वर्ष है - रविदेव आर्य

पूर्व लोकायुक्त श्री सज्जन सिंह कोठारी ने आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया

जयपुर 07 अप्रेल। आर्य जगत के गौरव और राजस्थान के पूर्व लोकायुक्त श्री सज्जन सिंह कोठारी ने कहा कि वेद अपौरुषेय ज्ञान है। सृष्टि के आदिकाल में प्राणिमात्र के कल्याण के लिए परमेश्वर ने जो ज्ञान दिया था उसके प्रचार का दायित्व आर्य समाज के कार्यकर्ताओं पर है। महर्षि दयानन्द ने मानव जाति को आह्वान किया कि वेदों की ओर लौटो। विश्व ने उनकी बात को नहीं सुना इसीलिए आज सारे विश्व में अशांति है, खून-खराबा है, सामाजिक विसंगतियां है, पाखण्ड है। चारों तरफ अंधकार ही अंधकार है। अत: आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्ताओं को मैं धन्यवाद देता हूँ और उनका तहेदिल से सम्मान करता हूँ।

पं. रविदेव आर्य ने उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा यह नया वर्ष हिन्दुओं का ही नहीं मानव जाति का नया वर्ष है। ईश्वर ने सृष्टि को बनाया तो उसका कोड ऑफ कंडक्ट भी बनाया। यह वेद ज्ञान है। एक ही समय पर सरस्वती व लक्ष्मी की कृपा कुछ लोगों पर ही होती है। विद्वान होगा तो धनवान नहीं होगा। धनवान है तो विद्वान नहीं होगा। कलिंग युद्ध हुआ तो अशोक ने अहिंसा को अपना लिया। बौद्ध धर्म के बाद, जैन धर्म ने अहिंसा पर जोर दिया। हम युद्ध से विमुख होते गये। शौर्य के बिना राष्ट्र की आजादी समाप्त हो जाती है। विषम परिस्थितियों में भी जल अग्नि को बुझाने की क्षमता रखता है। हम भी क्रोध की स्थिति में अपने धर्म को छोड़ देते हैं। सामान्य स्थिति में हम संबंधित व्यक्ति से क्षमा मांगते हैं। हम समाज में रहते हैं, हमें अनेक प्रकार के लोग मिलते हैं।

ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना सत्याग्रही व्यक्तियों के लिए की। उन्होंने कहा कि मैं जो भी कह रहा हूँ उसे सत्य की कसौटी पर कसिए फिर उसे मानिए। इसके लिए स्वाध्याय की आवश्यकता है। नहीं तो अंधविश्वासी कहलाते हैं। हम ब्रह्मा को मानते हैं, तो उसके उत्पत्ति स्वरूप को मानते हैं, विष्णु और शिव स्वरूप को मानते हैं, पालनकर्ता व संहारकर्ता के रूप को मानते हैं। एक माँ के अंदर तीनों रूपों को देखते हैं। मदर टेरेसा ने गरीबों की सेवा की लेकिन उन पर अपने ईसाई मत को थोप दिया।

धर्म तो सनातन ही है। हममें से कोई वेद, गीता, उपनिषद पर विश्वास रखता है। आर्य समाजी होने के कारण लोग हमसे न डरें। इनके पास बैठने व संवाद करने से विवाद होगा। जिसमें छह गुण होते हैं वह भगवान होता है ईश्वर नहीं हो सकता है। हम सब उस प्रभु की इच्छा से इस संसार में अवतार लिया है उसके गुण हममें हैं। हम सब आत्मा है। रिलीजन शब्द धर्म को परिभाषित नहीं करता है। सेक्यूलर शब्द का अर्थ लोग करते है हम सबको समान दृष्टि से देखें। वास्तविक अर्थ- धर्म निरपेक्ष होता है।

हमारे यहां रेस्ट ऑफ पीस दिवंगत व्यक्ति के लिए मुस्लिम व ईसाई लोगों में होता है। पुनर्जन्म नहीं मानते। अल्लाह व गॉड कयामत के दिन उसका फैसला करेगा तब तक कब्र में पड़ा रहेगा। हमारे यहां पुनर्जन्म हो जाता है। हमारे यहां चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष हैं। धर्म के द्वारा अर्जित धन ही अर्थ है अन्यथा अनर्थ करके रहेगा। हम सब कर्ता भाव न रखकर न्यासी भाव से प्रभु प्रदत्त ऐश्वर्य का उपयोग करें। हम प्रात:काल शौच आदि से निवृत करना शूद्रत्व, स्नान आदि करके ईश्वरोपासना करना ब्राह्मणत्व, घरेलू कार्यों व धनार्जन करना वैश्यत्व व अपनी व समाज की रक्षा करना क्षत्रियत्व धारण कर लेते हैं।

हम आर्य हैं आर्य रहेंगे। हमें इसके लिए योग्य बनना है। हम प्रारंभिक कक्षा में हैं।

रामनवमी के महत्व को बताते हुए कहा कि सारी सृष्टि का सृजन अंधकार में ही होता है। रात्रि में सारी वनस्पति वृद्धि को प्राप्त करती है। माँ के गर्भ में अंधकार में शिशु का विकास होता है, दिन में पोषण होता है।

हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि यदि हमारी मनोकामना पूरी हो जाएगी तो आपको कुछ अर्पण करेंगे जबकि हमारे पास ऐसी कोई वस्तु नहीं जो हम उसे अर्पण करें।

हम पशु-पक्षी, जलीय जंतु से भिन्न है। आत्मा मन के द्वारा 10 इन्द्रियों के साथ बुद्धि के द्वारा निर्णय लेती है। यह वाणी जिह्वा से आती है। इसलिए हम कहते हैं जबान को संभालकर रखें। यह वाणी हमें समाज में प्रतिष्ठा व अपमान का कारण बनाती है। हमें दयानन्द ने आर्योदेश्य रतनमाला दी है इसका मनन करें।

कार्यक्रम के प्रारंभ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान सत्यव्रत सामवेदी ने अतिथियों का परिचय दिया। सामवेदी जी ने कहा कि आर्य समाज के साथ युवा शक्ति का अभाव है। भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, लाला लाजपत राय, गुरुदत्त आदि युवकों ने आर्य समाज को सींचा है।

कोठारी जी ने आर्य समाज राजापार्क के अरुणा जी देवड़ा, नरेन्द्र मोहन पालीवाल, गुलशन नारंग, संजीव नारंग, नरेश नारंग, हरीश मक्कड़, राजेन्द्र नारंग, श्याम मदान, सुधांशु साहा, रामस्वरूप, नाथूलाल शर्मा, डॉ. एम.एल. सोनगरा, अनिरुद्ध साहनी, राजेश भटनागर आदि सक्रिय कार्यकर्ताओं एवं याज्ञिकों को सम्मानित किया।

आर्य समाज आदर्श नगर द्वारा संचालित समस्त शिक्षण संस्थाओं के प्रधानाचार्य, प्राचार्या व समस्त स्टाफ व पदाधिकारी भी उपस्थित थे। नगर की आर्य समाजों के पदाधिकारी व सदस्यों ने गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज के मंत्री बलदेवराज आर्य ने किया।

एक ऐसा आर्य समाज भी है

जयपुर 09 अप्रेल। आर्य जगत के लिए यह गर्व की बात है कि इस विश्व में एक ऐसा आर्य समाज भी है जहां कार्यालय में जाते ही गाय के दूध की छाछ पिलाई जाती है और इसके बाद कोई बात होती है। इस आर्य समाज का नाम है आर्य समाज, राजापार्क जयपुर।

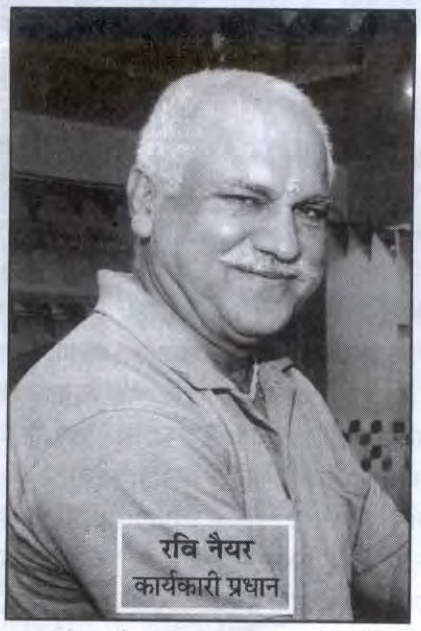

रवि नैयर
कार्यकारी प्रधान

रवि नैयर इस आर्य समाज के कार्यकारी प्रधान बनाये गए हैं और कार्यकारी प्रधान बनने पर उन्होंने अपने कार्यालय में छाछ पिलाने की परम्परा शुरू की है।

सारे आर्य जगत में यह चर्चा है कि आर्य समाज अपने पुराने गौरव को कैसे प्राप्त करे। रवि नैयर का कहना है कि महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के 10 नियमों में एक नियम यह दिया है कि संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। हम क्या उपकार करते हैं।

रवि नैयर की मेज पर लिख हुआ है मेरे योग्य सेवा बताइये। यदि आप गुंडों से परेशान हो, असामाजिक तत्वों से दुखी हैं, नगर निगम की अकर्मण्यता से नारकीय जीवन बिता रहे हैं तो हमारे पास आईये। गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार विवाह सम्पन्न कराना उनका पुराना शौक है। पति-पत्नी में जब तलाक की नौबत आ जाती है तब वे रवि नैयर के पास पहुंचते हैं।

महर्षि दयानन्द ने गाय का महत्व प्रतिपादित किया और अनेक गौशालाएं खोली परंतु आर्य समाज की शायद ही कोई गौशाला ठीक ढंग से चलती हो। रवि नैयर प्रतिमास गौशाला के लिए अपने क्षेत्र से छह लाख रुपया एकत्रित करके देते हैं और आर्य समाज में गरीब लोगों को 23 लाख रुपए का राशन बांटा जाता है।

अब वे गोबर की लकड़ी बना रहे हैं और लोगों को प्रेरित कर रहे हैं कि पेड़ों को बचाने के लिए श्मशान में गोबर की लकड़ी का उपयोग किया जाए। इसमें पेड़ की लकड़ी से आधा खर्च होता है और गरीब परिवार भी दाह संस्कार कर सकते हैं। आर्य समाज राजापार्क में उन्होंने प्रतिमास सामूहिक भोज की भी परंपरा प्रारंभ की है। अन्य आर्य समाजें भी इनका अनुकरण करें तो आर्य समाज का पथ प्रशस्त हो सकता है।

आर्य समाज के प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी ने अपना सारा कार्यभार श्री रवि नैयर को सौंप दिया है परंतु वे उनके पथ प्रदर्शन के बिना कोई भी कार्य करने के लिए तैयार नहीं हैं।

भ्रष्ट नेताओं से मुक्ति का विकल्प है आम चुनाव

-: पूरण चन्द सरीन :-

आम चुनाव एक तरह से ऐसे पर्व या त्योहार के रूप में आता है जिसे मनाने से पहले घर और बाहर या दुकान और दफ्तर की अच्छी तरह साफ सफाई करते हैं ताकि कूड़ा कचरा न रहे, गन्दगी दूर हो और स्वच्छता का वरदान मिले, साथ ही पुरानी बेकार हो चुकी चीजों को बेचकर उनकी जगह नए मॉडल और पहले से अधिक कुशलता के साथ काम करने वाले उपकरण आदि खरीद कर लाते हैं। यह सब इसलिए करते हैं जिससे तन और मन दोनों को खुशी मिले तथा मायूसी और सुस्ती के बजाए ताज़गी का अहसास हो। अगर आम चुनाव भी एक त्योहार है तो यही मौका है कि हम अपने आसपास और समाज में यह देखें कि बदबू कहां से आ रही है। यह पर्व मनाने का मौका पांच साल में एक बार मिलता है और अगर ढंग से सफाई नहीं हुई और जरा सी भी गन्दगी साफ करने से चूक गए तो अगले पांच साल तक इंतजार करना होगा। जब ऐसा है तो निकालिए औजार और हथियार ताकि देश का कोई कोना ऐसा न रहे जो साफ होने से बच जाए।

आपके पास अब प्रतिदिन लुभावने वायदों, सौगातों से लेकर सैर सपाटे और अय्याशी करने के साधन तक पेश किए जाएंगे। समझ लीजिए कि अगर कोई यह सब लेकर आपके पास आता है और आप बिना भलीभाँति सोच विचार किए उसकी बातों में आ जाते हैं तो आप एक ऐसे धोखे का शिकार हो सकते हैं जिसकी भरपाई पांच साल से पहले नहीं होने वाली और आप हाथ मलने तथा पछताने के अलावा और कुछ नहीं कर सकते। विभिन्न राजनीतिक दल, नए पुराने, अलग-अलग मुखौटों के साथ आपके सामने चकरघिन्नी की तरह नाचने से लेकर आपको रिझाने के लिए तरह-तरह के करतब दिखाएंगे ताकि, आप उनका एक बार विश्वास कर लें और वे आपके वोट की सीढ़ी पकड़कर वैतरणी पार कर लें। इस परिस्थिति में जरूरी है कि जब किसी दल का कोई कार्यकर्ता या स्वयं उम्मीदवार आपके सामने आ जाए तो आप उससे कुछ सवाल अवश्य पूछें जिनके उत्तर की जांच पड़ताल आपको इस प्रकार करनी है कि जैसे दही में से मक्खन और छाछ को अलग किया जाता है। सवाल पूछने से पहले आपको तैयारी भी उसी तरह करनी है जैसे किसी इंटरव्यू में जाने से पहले की जाती है। आजकल इंटरनेट और सोशल मीडिया का दौर होने से यह काम बहुत आसान हो गया है और किसी के बारे में व्यक्तिगत से लेकर गोपनीय जानकारी तक पलक झपकते आप हासिल कर सकते हैं।

जो प्रत्याशी खड़ा हुआ है, अगर वह पहले से आपके इलाके का सांसद है तो उसके बारे में यह पता लगाइए कि चुने जाने से पहले की तुलना में उसकी धन दौलत, जमीन जायदाद और रहन सहन जैसे मकान, बंगला, गाड़ी जैसी चीजों में कितनी बढ़ोतरी हुई है। अगर यह सामान्य लगे तो ठीक वरना सवाल पूछने से मत चूकिए कि इतना जलवा कहां से इकट्ठा किया। जवाब से संतुष्ट हो जाएं तो बेहतर वरना यह समझकर कि दाल में कुछ काला है अपनी जांच पड़ताल जारी रखें और अपने साथ आसपास के निवासियों को भी शामिल कर लें। उसके यह कहने पर मत जाइए कि उसने पर्चा भरते वक्त पूरी जानकारी चुनाव आयोग को दे दी है। यह जांचने के बाद कि उसका कोई आपराधिक इतिहास तो नहीं है और अगर कोई है तो उसे दरवाजे से लौटा दीजिए। साम्प्रदायिक दंगों, लड़ाई-झगड़े और मनमुटाव तथा दबंगई में उसका शामिल होना पता चल जाए तो भी उससे दूर से ही दुआ सलाम कर लीजिए, उसे किसी तरह का भाव देना आपके लिए कष्टकारी हो सकता है। असल में वोट डालना तो महत्वपूर्ण है ही पर उससे भी ज्यादा जरूरी ये तय करना है कि वोट किसे दिया जाए, कहीं पात्र या सुपात्र की जगह कुपात्र को तो हमारा वोट नहीं पड़ गया।

समाज को बदलना है और देश को तरक्की के पुख्ता रास्ते पर ले जाना है तो संसद में ऐसे लोगों को भेजिए जो बेशक किसी दल से न हों पर योग्य हों। ऐसा होने पर चाहे सत्ता किसी भी दल की हो वह इन लोगों की काबलियत से देश को वंचित रखने का दुस्साहस नहीं करेगा और यह लोग भी ध्यान रखेंगे कि बिना लागलपेट और गलत रास्ता अपनाए बिना देश के हित में सरकार को निर्णय लेने के लिए अपने तर्कों से बाध्य कर सकेंगे।

जरूरी नहीं कि वह किसी राष्ट्रीय या क्षेत्रीय पार्टी का ही उम्मीदवार हो, अगर कोई निर्दलीय परंतु हर प्रकार से आपकी कसौटी पर खरा है तो उसे वोट दीजिए। आम तौर से पार्टियां उन्हें उम्मीदवार बनाती हैं जो किसी भी तरह से आपका वोट ले सकते हैं, चाहे कोई हथकंडे या फरेब या गुमराह या लालच से ही आपको भरोसा दिला दिया हो तो ऐसे व्यक्ति को मतदान से पहले ही नकार देने में भलाई है। कहने का मतलब यह है कि यदि कोई वैज्ञानिक है, शिक्षक है या कोई अन्य प्रोफेशन में कीर्तिमान स्थापित किए हुए है और साथ में अपनी ईमानदारी और लगन से भी आपको प्रभावित कर सकता है तो उसे भी संसद में भेजा जा सकता है। आमतौर से ऐसे लोग अभी तक तो ज्यादातर हार का ही मुख देखते रहे हैं क्योंकि सभी प्रकार से योग्य होते हुए भी साधन न होने की बजाए से चुनाव में विजयी नहीं हो पाते।

समाज को बदलना है और देश को तरक्की के पुख्ता रास्ते पर ले जाना है तो संसद में ऐसे लोगों को भेजिए जो बेशक किसी दल से न हों पर योग्य हों। ऐसा होने पर चाहे सत्ता किसी भी दल की हो वह इन लोगों की काबलियत से देश को वंचित रखने का दुस्साहस नहीं करेगा और यह लोग भी ध्यान रखेंगे कि बिना लागलपेट और गलत रास्ता अपनाए बिना देश के हित में सरकार को निर्णय लेने के लिए अपने तर्कों से बाध्य कर सकेंगे। ऐसे दूरदर्शी और विद्वान लोगों को संसद में अपने प्रतिनिधि के रूप में भेजने के लिए यदि वोटरों को आर्थिक सहायता भी करनी पड़े तो तनिक भी मत हिचकिए। सही के स्थान और गलत को चुन लिया तो उसकी भारी कीमत चुकाने को तैयार रहिए और तब आप कुछ कर भी नहीं सकेंगे क्योंकि जब चिड़िया चुग गई खेत तो फिर पछताने से कोई फायदा नहीं होगा।

हमारे देश में जनसंख्या कुछ इस हिसाब से बढ़ती है कि हर चुनाव में करोड़ों लोग पहली या दूसरी बार मतदान करते हैं। युवाओं को चाहिए कि वह उम्मीदवारों से सवाल करें कि उनकी शिक्षा और फिर व्यवसाय या रोजगार मिलने की व्यवस्था करने की उनके पास कोई योजना है तो वह विस्तारपूर्वक उन्हें समझाएं। जाहिर है बहुत कम उम्मीदवार इन सवालों के व्यावहारिक जवाब दे पाएंगे क्योंकि अभी तक यह होता रहा है कि नेताओं के लिए पढ़ा लिखा होना जरूरी नहीं समझा जाता और इसलिए वे कभी भी युवाओं की सोच के करीब नहीं पहुंच पाते। इस बार युवाओं को वोट देने से पहले यह सुनिश्चित कर लेना होगा कि उम्मीदवार पढ़ने लिखने के नाम पर गोल तो नहीं है, वह अपनी दबंगई से तो आपको प्रभावित नहीं कर रहा या फिर धोंस तो नहीं जमा रहा या ख्याली पुलाव तो नहीं पका रहा। कुछ दल ऐसे लोगों को उम्मीदवार बनाने से युवाओं को भरमा सकते हैं जिनकी छवि चाहे गुंडागर्दी की हो लेकिन युवाओं के वोट उनकी झोली में डाल सकते हों, तो इनसे सावधानी बरतनी होगी। इनमें देशविरोधी नारे लगाकर अपनी नेतागिरी की धाक जमाने की कोशिश करने वालों की पहचान करनी आवश्यक है।

सत्ता सुख हित, विपक्ष राष्ट्रहित से खेलना बन्द करे

-: नवीन कुमार शर्मा 'कौशल' :-

देश में पुलवामा आतंकी हमले के बाद बना आक्रोशपूर्ण वातावरण जहां नित नई ऊंचाइयों के तरफ बढ़ रहा है, वहीं एक तरफ शहादत और शौर्य को यादकरते हुए अनेक हाथ शहीदों और योद्धाओं के परिवारों की सहायतार्थ उठ रहे हैं। वहीं देश के राजनैतिक दल पिछले 70 वर्षों के इतिहास से दूर हटकर निकट खड़े होकर लोकसभा के आम चुनावों को देखते हुए अपना अलग ही राग अलापे हुए हैं। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने पुलवामा आतंकवाद त्रासदी के समय को लेकर जो प्रश्न किया है वो उनकी मानसिकता का स्पष्ट परिचायक है। उनके अनुसार यह घटना चुनावों से कुछ पहले ही क्यों घटित हुई? यदि उन्हें इस घटना के पीछे शासक दल की राजनीति की गंध आती है तो ये उनका निन्दनीय विचार ही कहा जायेगा। जिन सीआरपीएफ के जवानों को जीवन से हाथ धोना पड़ा, अच्छा रहता उनके विषय में श्रद्धासुमन के रूप में दो शब्द कहते हुए वो देश की सरकार और सेना के साथ खड़ी नजर आतीं किन्तु ऐसा नहीं हुआ।

राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के वर्तमान शासनकाल में जब जब देश पर आतंकवादी हमला औश्र उसका जवाब हमारे सुरक्षा बलों और सैनिकों ने अपने जोश, देशभक्ति के साथ देने का पावन कार्य किया, वहीं हमारे शासक दल के विपक्षी दल इन मुद्दों पर भी अपनी क्षुद्र राजनीति करने से नहीं कतराते। सेना द्वारा वस्तुस्थिति सामने रखने के बाद भी वे प्रमाण चाहते हैं, इससे पहले हुई सर्जिकल स्ट्राइक के समय भी अरविन्द केजरीवाल जैसे अनेक नेताओं ने सर्जिकल स्ट्राइक के प्रमाण मांग कर देश को शर्मिन्दी दी थी। जबकि सेना द्वारा इस विषय में विस्तृत जानकारी देश के सामने रख दी थी।

पुलवामा आतंकी हमले की त्रासदी से ग्रस्त देश के बुदिजीवि उस समय और सकते में पड़े जब कांग्रेस के दिग्गज नेता और मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने पुलवामा हमले को दुर्घटना करार दिया व अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया की दुहाई देकर भारत द्वारा की गयी सर्जिकल स्ट्राइक में कितने आतंकवादी मारे गये, इसके प्रमाण मांगे। ऐसा नहीं अकेले दिग्विजय सिंह ही इस बात के पक्षधर हों। बल्कि कांग्रेस के बड़बोले नेता और पंजाब के मंत्री नवजोत सिद्धू ने तो एयर स्ट्राइक के नाम पर भारतीय सेना द्वारा आतंकवाद के अड्डों के पास लगे पेड़-पौधे भारतीय सेना द्वारा उखाड़े जाने तक की बात कह दी। देश की शर्मिन्दगी का क्रम यहीं नहीं रुका। कांग्रेस के एक और दिग्गज नेता तथा पूर्व वित्त मंत्री पी. चिदम्बरम ने तो एयर स्ट्राइक से किसी आतंकवादी के मारे जाने तक को नकार दिया। रणदीप सुरजेवाला हों या अरविन्द केजरीवाल, कपिल सिब्बल, सीताराम येचुरी, मायावती, महबूबा मुफ्ती, अखिलेश यादव या लालू पुत्र सभी की एक सी भाषा शीघ्र होने वाले चुनावों के परिदृश्य में पुलवामा हमले के बाद हुई जोरदार एयर स्ट्राइक से खिसकती अपनी जमीन और समय की नजाकत को देखते हुए सत्ता पक्ष को नीचा दिखाने के नाम पर ऐसे अनर्गल बयानों का क्रम जारी है और यही बयानों का क्रम पाकिस्तानी मीडिया की हैडलाइन निरन्तर बनता जा रहा है। नेता भारत के, प्रसिद्धि पाक में। भारत के हित चिंतन के साथ माना सत्ता पक्ष को घेरना विपक्ष का काम है, किन्तु सत्ता पक्ष को घेरने के नाम पर विपक्ष सेना के शौर्य के साथ क्यों खिलवाड़ कर रहा है तथा सरेआम प्रश्नचिन्ह लगाकर सैनिकों के मनोबल को कमजोर करने और अपने राजनैतिक स्वार्थों की पूर्ति में लगा है। हमारा इलेक्ट्रोनिक मीडिया भी पाक चैनलों के दृश्य दिखाकर भारतीय नेताओं के सबूत मांगने वाले विचारों को तिल का ताड़ बनाकर केवल टीआरपी बटोरने का ही कार्य कर रहा है। जबकि इस समय देश आतंकवाद के खात्मे की तरफ सेना के शौर्य के साथ आगे बढ़ रहा है।

सैन्य अधिकारियों द्वारा बताये जाने के बावजूद वायु सेना की एयर स्ट्राइक तथा उसमें मरे आतंकवादियों की संख्या और प्रमाण मांग कर क्या विपक्ष अपने राजनैतिक सवर्थों को देश की जन अदालत के माध्यम से पूरा कर पायेगा, यह एक यक्ष प्रश्न है। देश की जनता एकजुट होकर सेना और सैन्य कार्यवाही के साथ खड़ी है व आतंकवाद को समूल उखाड़ फेंकने तथा आतंक को पनाह देने वाले राष्ट्र पाक को ठोस सबक सिखाने की कार्यवाही में सहभागी है। एयर स्ट्राइक होने के बाद जहां पाक सरकार पहले नकारती रही वहीं वहां की सुरक्षा परिषद की बैठक तुरंत बुलाना तथा भारत पर एफ 16 विमान से किये गये पाक आक्रमण के प्रयास करना आखिरकार पाक को पहुंची असामान्य पीड़ा का ही परिणाम है। इसे हमारे देश का विपक्ष भले ही समझते हुए भी नकारने का प्रयास करे किन्तु वास्तविकता वास्तविकता ही रहती है।

एयर स्ट्राइक के दो दिन बाद पाक विदेश मंत्री महमूद कुरैशी का बयान कि आतंकवादी सरगना मसूद पाकिस्तान में इलाज करा रहा है, चल फिर नहीं सकता, उसकी किडनी फेल है तथा हाल ही में दिये बयान कि वह पाकिस्तान में नहीं है, ये दर्शाते हैं कि पाक जिस कदर भारत से घबराकर आतंकवादियों को संरक्षण देने और उन पर असत्य कथन कहने का आदी बन रहा है। मसूद के परिवार के 3 सदस्यों का भी हमारे द्वारा की गयी एयर स्ट्राइक में मारा जाना भारत द्वारा एयर स्ट्राइक की बात रखने के बाद उसका पाक द्वारा खण्डन न करना इस बात का परिचायक है कि एयर स्ट्राइक के जोरदार परिणामों से पाक हिल गया। बावजूद इसके हमारा विपक्ष है कि प्रमाण मांग रहा है।

वायु सैन्य अधिकारियों द्वारा अपने वक्तव्य में ये कहा गया कि एयर स्ट्राइक लक्ष्य पर हुई। जिस लक्ष्य पर यह कार्यवाही हुई, वहां लगभग 3 सौ मोबाइल सक्रिय थे। जो एयर स्ट्राइक के बाद जल गये। इससे बड़ा सबूत और क्या हो सकता है? पाकिस्तान भारतीय वायुसेना द्वारा की गयी एयर स्ट्राइक को कबूल करने की कभी जुर्रत नहीं करेगा। क्योंकि यदि वह कबूल करता है तो उसे विश्व स्तर पर आतंकवादी राष्ट्र घोषित कर दिया जायेगा। एयर स्ट्राइक के बाद पाकिस्तान के झूठों में से एक झूठ यह रहा कि उसने अपने वीडियो में गड्ढे और टूटे हुए पेड़ों का दृश्य दिखाया। 1 हजार किलो का बम पड़ने पर गड्ढा गहरा होना चाहिए और क्षेत्र काला होना चाहिए। जो गड्ढा उसके द्वारा दिखाया गया वो फावड़े से खोदा गया स्पष्ट नजर आ रहा था। काला नहीं था। जो स्पष्ट दर्शाता है पाक के असत्य को।

पंजाब सरकार के बड़बोले मंत्री नवजोत सिद्धू ने लगभग इसी दृश्य को समझते हुए वायु सेना के शौर्य पर प्रश्न किया कि हमारे सैनिक वहां पेड़ तोड़ने गये थे, नितांत मर्मांतक और अशोभनीय है। हमले के बाद पाक ने कहा कि किसी की मौत नहीं हुई। असली फोटो दिखायेंगे और हम अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया में ले जायेंगे। आज तक पाक द्वारा ऐसा न करना, बालाकोट की एक भी फोटो जारी न करना पाक के झूठ को ही दर्शाता है। यदि वो वास्तविक फोटो जारी करता तो वास्तविकता कुछ और ही नजर आती। यदि वहां सब कुछ नुकसान रहित होता तो पाक अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया को वहां ले जाता और बालाकोट की वो बिल्डिंग दिखाता। सैटेलाइट की दो तस्वीरें स्पष्ट रूप से उस बिल्डिंग की पहले दशा और एयर स्ट्राइक के बाद की दशा को दर्शा रही है। यही प्रमाण हमारे सत्तापक्ष के विपक्षियों के लिए भी कारगर हो सकता है। किन्तु सिर पर खड़े चुनावों का भय उन्हें ऐसा करने से रोक रहा है। पाक ने पहले कहा कि एयर स्ट्राइक नहीं हुई। बाद में कहा कि जंगल में बम फेंके। दूसरी तरफ हाई लेवल मीटिंग आयोजित करना, बदले की कार्यवाही का मन बनाना तथा एफ 16 विमानों से भारत पर हमले का प्रयास ये साबित करता है कि एयर स्ट्राइक जोरदार हुई थी और इस एयर स्ट्राइक की चोट की पीड़ा से ग्रस्त पाकिस्तान में ऐसा किया। पाक प्रधानमंत्री इमरान खान का बयान जिसमें उन्होंने युद्ध से दूर रहने तथा दोनों देशों के युद्ध की स्थिति में दोनों देशों को परमाणु सम्पन्न देश बताते हुए युद्ध की प्रारंभ और उसकी समाप्ति पर प्रतिक्रिया देते हुए इंशाह अल्लाह को याद करना क्या भारत द्वारा की गयी एयर स्ट्राइक से जनित पाक को हुई पीड़ा का बयां नहीं करता? इमरान का नासमझीपूर्ण किन्तु अन्तर्राष्ट्रीय दबाव के बाद दिया गया बयान रहा। जैश-ए-मोहम्मद ओर तहरीके इंसानियत जैसे पाक में पनप रहे आतंकी संगठनों पर क्या पाक बिना कुछ घटित हुए प्रतिबंध लगाने की कार्यवाही का नाटक करता? यह भी समझने के बाद निष्कर्ष यही निकलता है कि एयर स्ट्राइक जोरदार हुई। एफ 16 विमान जो अमेरिका द्वारा आतंकवाद से निपटने के लिए पाक को निश्चित शर्तों पर दिया गया था, उसका उपयोग पाक ने भारत पर हमले की कार्यवाही में किया। उसका ये विमान भारतीय वायु सैनिकों ने मिग 21 के माध्यम से मार गिराया। अमेरिका इस पर गहन जांच कर रहा है कि पाक ने समझौते का उल्लंघन क्यों किया?

इसी समय पाक सेना द्वारा यह कहना कि हमने भारत के दो विमान गिराये हैं और दो पायलट हमारे कब्जे में हैं। जबकि केवल एक मिग 21 विमान तकनीकी खराबी के कारण क्षतिग्रस्त हुआ और उसके पायलट विंग कमांडर अभिनन्दन वर्धमान पैराशूट से उतरते समय पाक क्षेत्र में पहुंच गये। जहां उनके साथ बदसलूकी और पाक सेना द्वारा गिरफ्तार किया गया।

भारत व विश्व के अनेक देशों के माध्यम से पड़े अन्तर्राष्ट्रीय दबाव के परिणामस्वरूप एयर स्ट्राइक के 60 घंटे बाद पाक सरकार द्वारा विलम्ब, विलम्ब और विलम्ब करते हुए हमारे जाबांज विंग कमांडर अभिनन्दन वर्धमान को मजबूरी में छोड़ा गया और सकुशल भारत का पराक्रमी लाल भारत को मिला।

पाक ने अपने नष्ट हुए एफ 16 विमान के पायलट की मौत कीखबर छिपायी। क्योंकि वो इसे सार्वजनिक नहीं कर सकता था। सार्वजनिक करने पर आतंकी देश ही कहलाता, जो वास्तव में वो है। कुछ समय पूर्व तक हाफिस सईद जैसे आतंकी पाक में खुलेआम घूमते थे, सभायें करते थे, भारत के विरुद्ध जहर उगलते थे, पाक ने सभी आतंकियों को सैन्य ठिकानों में छिपाया। उसे पता था भारत आतंकी ठिकानों पर हमला करेगा, सैन्य

(शेष पृष्ठ 5 पर)

आओ स्वागत करें नव संवतसर 2076 का

-: टंकाराश्री अरुणा सतीजा :-

आओ स्वागत करें
नव-संवतसर 6.4.2019 को प्रणाम
ओ३म् ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः॥
ओ३म् समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी॥
ओ३म् सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्।
दिवञ्च पृथिवी चान्तरिक्षमथो स्वः॥

ऋ.अ 8/मं08/व 48//

आओ सब मिल कर वेद माता द्वारा दिये गये वैदिक नव-संवतसर को वैदिक विधि विधान से मना कर स्वागत करें।

नव-संवतसर प्राणी मात्र के लिये मंगलमय, कल्याणकारी, सद्बुद्धि, सद्ज्ञान, विवेक तथा ऐश्वर्य प्रदान करने वाला हो। तीनों लोकों अर्थात् जल, थल तथा द्यौलोक में शांति प्रदान करने वाला तथा उन्नति प्रदान करने वाला हो।

ऐतिहासिक दृष्टि से भी इसका महत्वपूर्ण स्थान है। आज के दिन सृष्टि संवत का शुभारंभ तो है ही परंतु आज के दिन ही श्रीराम राज्याभिषेक, शकरि विक्रम द्वारा विक्रमी संवत का शुभारंभ नवरात्र-स्थापना, गुरु अंगद देव का जन्मदिन महर्षि स्वामी दयानन्द जी द्वारा आर्य समाज संगठन की स्थापना आदि सभी महान कार्य इसी दिन प्रारंभ किये गये।

कुछ समय पूर्व एक जनवरी को सम्पूर्ण विश्व मेंपाश्चात्य नव वर्ष (जिसका वर्णन मैं अपने गत लेख में कर चुकी हूँ।) बड़ी मौज मस्ती के साथ मनाया गया। अब मैं आप का परिचय वेद भगवान द्वारा दिये गये सृष्टि संवत से करवाती हूँ। वेद का एक-एक शब्द कितना वैज्ञानिक है।

नव-संवतसर का अर्थ हुआ कि जिस दिन उसका जन्म हुआ। किसी की आयु जानने के लिये उस के जन्म-पत्र की आवश्यकता होती है। वेदों के माध्यम से हमारे देश में तो सृष्टि की उत्पत्ति, पृथ्वी उत्पत्ति और मनुष्य उत्पत्ति का जन्म पत्र और रोजनामचा बना बनाया तैयार रखा है।

ब्रह्म के एक दिन को कल्प अर्थात् सृष्टि काल कहते है जो चार अरब 32 करोड़ वर्ष का होता है। एक कल्प में 14 मन्तवन्तर या 1000 चतुयुर्गी होती हैं। अब तक वैवस्वत मनु की सत्ताईस चर्तुयुगियां बीत चुकी हैं। और 28वीं चतुयुर्गी में से भी तीन युग बीत चुके हैं। चौथे युग कलि के भी 5119 वर्ष बीत गये हैं। इस गणना के अनुसार सृष्टि की उत्पत्ति को अब तक एक अरब सत्तानवे करोड़ उन्तीस लाख उनचास हजार 119 वर्ष बीत चुके हैं।

अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि सृष्टि व पृथ्वी कब बनी और मनुष्य और वेद की उत्पत्ति कब हुई। सृष्टि की उत्पत्ति तब से मानी जाती है जब से सृष्टि को बनना प्रारंभ हुआ। यह वह काल है जब प्रलय का समय पूरा होकर सृष्टि बनने की प्रक्रिया शुरू होती है। अर्थात् प्रकृति का परस्पर संघात प्रारंभ होता है। इस समय से लेकर सूर्य, ग्रह, नक्षत्र बनने को 'स्वायम्भुव' मनु कहते हैं। इसके पश्चात स्वरोचित मनु के समय पृथ्वी तैयार हुई, तीसरे मनु से पृथ्वी से चन्द्रमा पृथक हुआ, पाचवें में वनस्पति, छठे में पशु, सातवें में वैवस्वत मनु में मनुष्य की उत्पत्ति हुई परंतु सृष्टि संवत मनुष्य उत्पत्ति से नहीं प्रत्युत सृष्टि उत्पत्ति से माना जाता है।

यजुर्वेद के मंत्रों में मधु-माधव, शुकु-शुचि, नभ-नभस्य, इष-उर्ज, सहस-सहस्य, तपस-तपस्य छः ऋतुओं का वर्णन है जिनको जन साधारण अर्थात् बोलचाल की भाषा में बसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त और शिशिर कहते हैं। नव-संवतस्वर का शुभारंभ मधु मास में होता है जिस समय प्रकृति अपने पूरे यौवन पर होती है। कामदेव के मन को मोह लेने वाली वैभवशाली प्रकृति की गोद में नव वर्ष का जन्म होता है। ऐसा मधुकाल चैत्र मास में आता है। चैत्रमास चित्रा नक्षत्र की पूर्णिमा के कारण इस मास का नाम 'चैत्र' हुआ है। चैत्र मास की प्रथम शुक्ल तिथि प्रतिपदा कहलाती है। यही प्रतिपदा सृष्टि का जन्मदिन है। जिस समय पहली बार सूर्य की पहली किरण पृथ्वी पर पड़ी वही बस वही समय नव-संवतसर का पहला दिन था।

सृष्टि के पश्चात प्रलय, प्रलय के बाद सृष्टि का क्रम अनादि काल से चला आ रहा है। सृष्टि की रचना करना, धारण करना, समय आने पर प्रलय करना, सर्व-सामर्थ्यवान, पूर्ण ज्ञानवान परमेश्वर का ही काम है।

परमेश्वर अपने सामर्थ्य को सार्थक करने के लिये तथा जीवों को उनके कर्मों के अनुसार फल देने के लिये सृष्टि की रचना करता है।

पंच महातत्वों में से सर्वप्रथम आकाश की उत्पत्ति होती है। आकाश की उत्पत्ति के समय एक ध्वनि गूंजती है 'अ-उ-म' जिसे 'शब्द ब्रह्म' कहा जाता है। इस अक्षर को केवल मुक्त आत्माएं ही सुन पाती हैं। इसके पश्चात अग्नि, वायु, जल आदि के सूक्ष्म तत्वों की उत्पत्ति के साथ विशालकाय अण्डे का निर्माण होता है। इसके पश्चात रात-दिन, पक्ष, मास, वर्ष आदि बनने के बाद में ईश्वर श्रेष्ठ प्राणी के रूप में मानव को उत्पन्न करता है। प्रारम्भ में ईश्वर ने कुछ युवा स्त्री-पुरुष के शरीर बना कर उनमें जीव डाल कर अमैथुनी सृष्टि की रचना की। बाद में मैथुनी सृष्टि चल पड़ी।

प्रथम मानव के रूप में ब्रह्मा जी तथा कुछ ऋषियों का निर्माण हुआ। इन्हीं ऋषियों में से चार दिव्य आत्माओं तथा प्रथम पुरुष ब्रह्मा जी के हृदय में चारों वेदों का ज्ञान प्रकाशित किया। यही से मानव व वेद उत्पत्ति संवत का शुभारंभ हुआ।

गोपथ ब्राह्मण में लिखा है कि पूर्वी फाल्गुनी नक्षत्र में पूर्व संवतसर की समाप्ति तथा उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र में संवतसर का शुभारंभ होता है। अतः नव-संवतसर वर्ष का पहला पर्व माना जाता है।

आओ वैदिक रीति-रिवाजों तथा विविध प्रकार के आयोजनों का आयोजन कर एवं सामूहिक यज्ञों द्वारा नव वर्ष का स्वागत करें। परस्पर एक दूसरे को नव-संवत की शुभकामनाएं भेजें, घर की ऊपरी छत पर ओ३म् ध्वज फहराये, घर के मुख्य द्वार पर आम तथा आशा पाल के पत्तों की बंदनवार सजाएं, वैदिक साहित्य बांटे। सहभोज अर्थात ऋषि लंगर की व्यवस्था कर नव संवतसर को बड़े जोर शोर से महोत्सव के रूप में मना कर स्वागत करें ताकि परम्पराओं के प्रति पुनः जागरण हो। घर-घर वेद ज्ञान के दीप जलें।

भारत मात्र सामरिक या भौतिक शक्ति बन कर विश्व पटल पर न उभरे परंतु एक बार पुनः विश्व का आध्यात्मिक गुरू बन मानव जाति का मार्ग दर्शन करें। जीवन जीने की कला स्वयं सीखे और सिखाएं।

आर्य शास्त्रों में वेदों का कद बहुत ऊँचा है। वेद में परमात्मा आज्ञा देते हैं कि भूमिमददामार्यार्य मैं ने यह भूमि आर्यों को दी है। आर्य ईश्वर पुत्राः - आर्य ईश्वर के पुत्र हैं। कृवन्तो विश्वमार्यम - संसार को आर्य बनाओ। महर्षि ने इस कठिन कार्य का उत्तरदायित्व अपने दृढ़ कंधों पर लिया। वेदों की बांसुरी बजा कर वेदों की ओर लौट चलो का स्वर निकाला। इस कार्यक्रम को मूत रूप देने के लिये 1875 में काकड़वाड़ी (मुंबई) में नव-संवतसर के महापर्व के शुभ अवसर पर प्रथम आर्य समाज की स्थापना की। फिर क्या था हर घर आर्य समाज बन गया परंतु पाश्चात्य सभ्यता की चकाचौंध तथा मैकाले की कूटनीति ने हमारी युवा पीढ़ी को पथ-भ्रष्ट कर दिया।

उत्थान, पतन, पुनः उत्थान तो सृष्टि का अटल नियम है-

आओ मिल कर नयी राहे बनाए,
ईश्वर का संदेश सुनाएं,
घर-घर ज्ञान के दीप जलाएं,
जगति भर को आर्य बनाएं।
ओ३म शांति शांति शांति।

इति।

सत्ता सुख हित .....

(पृष्ठ 4 का शेष)

ठिकानों पर नहीं। पाक में सब सही होता तो आतंकियों के बयान जरूर आते। आतंकियों को डर से छिपाना इस बात का प्रमाण है कि जोरदार एयर स्ट्राइक हुयी और भारत के आतंकियों पर पुनः हमले का डर उन्हें सता रहा है। भारत की रिसर्च संस्था एनटीआरओ ने एयर स्ट्राइक से पहले आतंकी अड्डे की नेटवर्क मैपिंग की थी। उस समय यहां 280 मोबाइल सक्रिय थे। आतंकी अड्डे पर एयर स्ट्राइक के बाद इन सभी मोबाइलों का बंद होना हमारी कार्यवाही की सफलता को ही दर्शाता है। पाकिस्तानी सेना ने भारतीय एयर स्ट्राइक के बाद ध्वस्त हुए बालाकोट के आतंकी अड्डे से लाशें हटाने, कब्र में दफनाने और वहां मीडिया को न जाने देने व सबूत मिटाने के कार्य किये और किये जा रहे हैं। मीडिया को वहां न जाने देने के पीछे एक ही रहस्य है कि यदि मीडिया वहां पहुंचा तो पोल खुल जायेगी।

इन सब तथ्यों के बाद भी भारत के 125 करोड़ जनता के सामने देश के विपक्षी राजनेता सत्तारूढ़ दल से आगामी लोकसभा चुनावों में दो-दो हाथ करने के नाम पर सबूत मांगते हुए सेना के शौर्य पर प्रश्नचिन्ह लगाने का निरर्थक कार्य करते हैं तो इससे सेना के शौर्य और मनोबल में कहीं कोई कमी आने वाली नहीं है। क्योंकि भारतीय सेना विश्व की सबसे व्यवस्थित और अनुशासित सेना है। विपक्ष के इस प्रकार के प्रयासों से देश का भला होने वाला नहीं है, बल्कि देश पर आये संकट के विभिन्न दौरों के समय देश की सम्पूर्ण एकता और एकजुटता के गवाह ऐतिहासिक क्षणों से अलग हटकर ही विपक्ष का यह कृत्य स्वयं विपक्ष को नहीं नुकसान पहुंचाने का कार्य करेगा। यही नहीं इससे पाक मीडिया में भले ही सुखी मिलें, लेकिन देश की जनता के मन में कभी सुर्खियां नहीं मिल सकती।

हाल ही में की गयी एयर स्ट्राइक को भारत के अतिरिक्त इजरायल, फ्रांस समेत विश्व के 41 देशों का समर्थन प्राप्त रहा। ये स्ट्राइक 200 घंटे की सटीक योजना के बाद जैश परिवार को निशाने पर लेते हुए की गयी एयर स्ट्राइक है। 12 मिराज विमानों से 4 से 5 एक हजार किलो के वजन के बम दागे गये। इस समय भारतीय सीमा में 3 सुखोई, 30 विमान तैनात थे। आदमपुर बेस पर 5 मिग 29 विमान सावधान थे। मिराज 2236 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से उड़ान भर सकता है और हर मिनट में 18 राकेट दाग सकता है। इस समय घटनाक्रम के बाद जहां भारत पर पाक के युद्ध विराम उल्लंघन नहीं रुक रहा है, वहीं कश्मीर में उठाये गये नये कदमों के आधार पर पत्थरबाजी पर रोक लग सकती है व कश्मीर में छिपे आतंकवादियों का एक-एक कर सफाया जारी है। न केवल भारत पूरी दुनिया इसे देख रही है।

लोकतंत्र में घृणा, नफरत और हिंसा का कोई स्थान नहीं-अशोक गहलोत

महर्षि दयानन्द शिक्षा समिति की मंत्री श्रीमती मृदुला सामवेदी को महिला शिक्षा में उत्कृष्ट कार्य के लिए मुख्यमंत्री ने पुरस्कृत किया

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा है कि लोकतंत्र में घृणा, नफरत और हिंसा का कोई स्थान नहीं है। देश और प्रदेश में शांति और सद्भाव के साथ ही हम चहुँमुखी विकास की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। हमें इसे बरकरार रखने के लिए प्रयास करने होंगे।

गहलोत शनिवार को 'काव्या' इंटरनेशनल एवं स्वच्छ नगर संस्था जयपुर के तत्वावधान में बिड़ला ऑडिटोरियम में आयोजित राजस्थान दिवस 2019 के कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों को राजस्थान स्थापना दिवस की बधाई देते हुए इस बात के लिए प्रसन्नता दर्शाई कि यह आयोजन जनता और नागरिक संस्थाओं की ओर से किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि राजस्थान को एक शक्तिशाली, प्रगतिशील और विकासशील प्रदेश बनाने मेंयहां की कर्मठ और मेहनतकश जनता के साथ लोकप्रिय जन प्रतिनिधियों, शिक्षाविदों, साहित्य, समाज सेवा, कला संगीत, पुरातत्व आदि क्षेत्रों से जुड़े लोगों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

उन्होंने कहा कि 70 साल पहले 30 मार्च 1949 को राजस्थान का निर्माण हुआ था। इससे पहले यहां छोटी-बड़ी 22 रियासतें थीं। इन रियासतों का एकीकरण करने में देश के महान सपूत और तत्कालीन केन्द्रीय गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल की महती भूमिका रही। उन्होंने कहा कि राजस्थान की संस्कृति, परम्परा और विरासत का गौरवशाली एवं समृद्ध इतिहास है। यहां की लोक कलाएं, लोक संस्कृति, लोकगीत और संगीत की पूरी दुनिया में खास पहचान है। राजस्थान का इतिहास वीरता, साहस एवं स्वाभिमान से भरा हुआ है। उन्होंने इस मौके पर स्वाधीनता संग्राम में योगदान करने वाले राजस्थान सहित सभी देश के ज्ञात-अज्ञात महान स्वाधीनता सेनानियों को नमन करते हुए कहा कि उन्हीं के त्याग और बलिदान के कारण यह देश आजाद हुआ।

मुख्यमंत्री गहलोत ने राजस्थान निर्माण के बाद हीरालाल शास्त्री, टीकाराम पालीवाल, जयनारायण व्यास, मोहनलाल सुखाड़िया, बरकतुल्ला खां, हरिदेव जोशी, भैरोंसिंह शेखावत, जगन्नाथ पहाड़िया, शिवचरण माथुर, हीरालाल देवपुरा, श्रीमती वसुंधरा राजे और मुझे मुख्यमंत्री के रूप में प्रदेश की सेवा करने का अवसर मिला। राजस्थान के विकास में सभी लोगों का योगदान रहा है। जनता के स्नेह, आशीर्वाद और विश्वास से मुझे तीसरी बार मुख्यमंत्री के रूप में प्रदेशवासियों की विनम्र सेवा का मौका मिला है। उन्होंने कहा कि मैंने जब मुख्यमंत्री के रूप में बागडोर संभाली तब गांव, गरीब और किसान प्राथमिकता में रहे और चहुंमुखी विकास र ध्यान देते हुए आमजन के कल्याणकारी योजनाएं प्रारंभ की। आप सब जानते हैं कि राजस्थान में अकाल हमारे स्थायी मेहमान की तरह रहा है। हमारे समय में भी कई बार अकाल पड़े किन्तु हमने मिलकर इस चुनौती का मुकाबला किया। अकाल पीड़ितों के लिए राहत कार्यों पर पर्याप्त मजदूरी, भरपूर अनाज, पशुओं के लिए चारे और पेयजल का प्रबंध किया।

महर्षि दयानन्द शिक्षा समिति की मंत्री श्रीमती मृदुला सामवेदी को महिला शिक्षा में उत्कृष्ट कार्य के लिए मुख्यमंत्री से पुरस्कार लेते हुए।

गहलोत ने कहा कि मुझे यह बताते हुए संतोष है कि पिछले सत्तर सालों में राजस्थान के सभी क्षेत्रों में जो विकास हुआ है, वह किसी भी दृष्टि से कम नहीं है। आज गांवों और शहरों, सभी जगह विकास और सुविधाओं का विस्तार हुआ है जिससे लोगों के सामाजिक-आर्थिक जीवन में सुधार आया है। प्रदेश में सड़क, बिजली, पानी, चिकित्सा, शिक्षा, सामुदायिक सेवाओं का विस्तार हुआ है। प्रदेश को शिक्षित और विकसित बनाने में यहां की जनता ने शासन एवं प्रशासन के साथ कदम से कदम मिलाकर काम किया है।

दुनियाभर में सूचना टेक्नोलोजी बढ़ी है। स्वर्गीय राजीव गांधी ने भारत को दुनिया के विकसित राष्ट्र के रूप में खड़ा करने की पहले से ही परिकल्पना कर ली थी। सूचना एवं प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में आज हम जो प्रगति देख रहे हैं यह सब स्वर्गीय राजीव गांधी की देन है।

उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि राजस्थान दिवस के शुभ अवसर पर प्रदेश के सेवाभावी महानुभावों को संस्था की ओर से सम्मानित किया गया है। यह एक अच्छी परम्परा है और इससे दूसरे लोगों को भी प्रेरणा मिलती है। उन्होंने सभी सम्मानितों को बधाई देते हुए कहा कि इन लोगों की सेवाओं को हम निरन्तर देख रहे हैं। उन्होंने इस आयोजन के लिए काव्या इंटरनेशनल एवं स्वच्छ नगर संस्था के पदाधिकारियों, सदस्यों एवं सभी को साधुवाद देते हुए आशा व्यक्त की कि रचनात्मक सेवाओं और कार्यों को निरन्तर बढ़ाने में ये संस्थाएं हमेशा तत्पर रहेंगी।

इस अवसर पर जस्टिस विनोद शंकर दवे, न्यायमूर्ति जैनेन्द्र कुमार रांका (विधि एवं न्याय), डी.आर. मेहता (दिव्यांगों की सेवा), कुशलचन्द सुराणा (जवाहरात उद्योग), श्री दीनबन्धु चौधरी, प्रवीण चन्द छाबड़ा (पत्रकारिता), जे.पी. शर्मा, दीपक गोस्वामी (इलेक्ट्रोनिक मीडिया), अनिला कोठारी (कैंसर चिकित्सा सेवा), मृदुल भसीन (स्वयंसेवी संस्था), डॉ. एम.एल. स्वर्णकार, डॉ. मंगल सोनगरा (चिकित्सा सेवा), डॉ. आईदान सिंह भाटी (राजस्थानी साहित्य), बी.पी. मून्दड़ा, साबिर हुसैन (समाजसेवा), रामसहाय बाजिया (सैन्य सेवा), मृदुला सामवेदी (महिला शिक्षा), भावना जगवानी (अंगदान) को उनकी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए मुख्यमंत्री एवं अन्य अतिथियों ने शॉल ओढ़ाकर एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। मुख्यमंत्री कार्यक्रम के समन्वयक नफीस आफरीदी एवं इवेन्ट गुरु अरशद हुसैन को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया।

प्रारंभ में आयोजन समिति के अध्यक्ष राजीव अरोड़ा, स्वच्छ नगर संस्था के अध्यक्ष डॉ. सत्यनारायण सिंह, काव्या फाउण्डेशन राजस्थान के अध्यक्ष वीर सक्सेना ने भी अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. सत्यनारायण सिंह ने राजस्थान दिवस पर लिखी अपनी पुस्तिका 'भारत की एकता का निर्माण : राजस्थान के संदर्भ में' मुख्यमंत्री को भेंट की। कार्यक्रम का शुभारंभ श्री गजानन्द के शहनाई वादन एवं डॉ. विजयेन्द्र के मांड गायन के साथ हुआ। कार्यक्रम का संचालन आकाशवाणी के पूर्व निदेशक इकराम राजस्थानी ने किया। अंत में निशब्द मूक बधिर विद्यालय को बालक-बालिकाओं ने राष्ट्रगान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में पद्मश्री शाकिर अली, राजस्थान के दूर-दराज इलाके से आए नागरिकों के साथ ही सैनिक परिवारों, बंजारा समाज, 'बाल सम्बल' के विशेष बच्चों, शिक्षा, साहित्य, संस्कृति, विधि एवं न्याय, चिकित्सा आदि क्षेत्रों के गणमान्य नागरिक बड़ी संख्या में मौजूद थे।

महबूबा! समझ जाओ .....

(पृष्ठ 1 का शेष)

विरुद्ध निरन्तर संघर्ष करते रहते हैं और विषवमन करते हैं।

काश्मीर की इस समस्या को धारा 35ए जोड़कर और जटिल बना दिया। संविधान में इसकी कहीं चर्चा नहीं है। बाद में 370 का ही उप प्रावधान बनाया गया, जो कहता है कि राष्ट्रपति के आदेश से आप विशेष प्रावधान जम्मू काश्मीर के लिए सम्मिलित कर सकते हैं। इसी के अंतर्गत वहां के स्थायी निवासी को जमीन, रोजगार आदि देने का अधिकार वहां की विधानसभा को है। 35ए के अनुसार वहां के नागरिक को दोहरी नागरिकता तथा भारतीय नागरिकों पर निषेध।

भारतवर्ष ने देख लिया है कि 1947 से लेकर 2019 तक धारा 370 के कारण काश्मीर में खून की नदियां ही बही हैं। इससे समस्या का समाधान नहीं हुआ। आप अगर भारतवर्ष में नहीं रहना चाहती और भारतवर्ष का संविधान आपको मंजूर नहीं है तो आप पाकिस्तान चले जाइए। आप वह दिन भूल गईं जब 1971 में पाकिस्तान की 91 हजार सैनिकों को हथकड़ी लगाकर भारतवर्ष की जमीन पर खड़ा कर दिया था और वे माफी मांग रहे थे। तो अब भारतवर्ष ने यह ठान लिया है कि धारा 370 और उप धारा 35ए समाप्त होगी और जो भी इसका विरोध करेगा चाहे वह महबूबा मुफ्ती हो या फारूख अब्दुल्ला उन्हें शेष जीवन जेल की सीखचों में बिताना होगा और उनका अल्लाह भी उनकी मदद नहीं कर सकता।

13 अप्रेल बैसाखी पर्व पर विशेष : युवा क्रांतिकारी ऊधमसिंह

हम शहीदाने वफा का दीनो-ईमां और है सिजदे करते हैं हमेशा, पाँव पर जल्लाद के

भारत माता के सपूत ऊधरसिंह अमृतसर के निकट एक गाँव में रहा करते थे। उनके पिता एक जागरूक व्यक्ति माने जाते थे। अपने देश में घटित होने वाली प्रत्येक घटना और स्थिति पर न केवल वे दृष्टि रखते थे अपितु यथासंभव उसमें रुचि व्यक्त करते हुए

अपनी तरह से भाग भी लिया करते थे। इसके लिए वे लाला लाजपतराय को अपना आदर्श मानते थे। पिता के विचारों का उन पर गहन प्रभाव पड़ा था। जनजागृति के कार्यों में उनका विश्वास होने से वे उनमें प्रवृत्त रहते थे।

अपनी इस मानसिकता के प्रभाव में ही ऊधमसिंह के पिता उस दिन जलियाँवाला बाग में भी उपस्थित थे जिस ऐतिहासिक दिन वह नरमेध वहाँ किया गया था। ऊधमसिंह की अवस्था उस समय 8-10 की रही होगी। उस समय ऊधमसिंह चौथी या पाँचवीं कक्षा के छात्र रहे होंगे। उस दिन ऊधमसिंह स्कूल न जाकर घर पर ही रहे थे।

घरवाले निश्चिंत थे कि पिताजी जलसे में गए हैं, निर्धारित समय पर घर आ जाएँगे। इसलिए घर पर उनके आगमन की प्रतीक्षा होती रही। किन्तु वह दिन अनेक पिताओं, अनेक माताओं, अनेक भाइयों, अनेक पतियों, अनेक बहिनों, अनेक बालकों और अनेक वृद्धों के घर न पहुँचकर किसी अन्य लोक में पहुँचने का दिन सिद्ध हुआ। जलियाँवाला बाग में गोली चली, लाठी चली और न जाने क्या-क्या चला किन्तु उस दिन भारतीयों का कोई वश नहीं चला।

ऊधरमसिंह अपने पिता की इस अमानुषिक हत्या से अपने को बहुत दु:खी अनुभव करने लगे थे। अमृतसर का हर परिवार उस दिन विषादग्रस्त था। फिर कौन किसको सान्त्वना देता। समय ही मलहम सिद्ध होता है, और वही इस घटना पर भी होने लगा। ऊधमसिंह दु:खी मन से स्कूल जाते और घर आते। उनको रह-रहकर पिता की स्मृति होती थी, किन्तु वह कुछ कर सकने में उस समय असमर्थ थे। यद्यपि ऊधमसिंह स्वभाव के दृढ़, बहादुर और कुछ सीमा तक हठी भी थे, किन्तु उस परिस्थिति में वह कुछ करने में असमर्थ ही रहे, जिसका उन्हें सदा खेद रहता था।

ऊधमसिंह ने किसी प्रकार मैट्रिक की परीक्षा तो उत्तीर्ण कर ली, किन्तु उसके बाद उनका पढ़ाई में मन नहीं लगता था। उनको रह-रहकर पिता की स्मृति सताती थी और वह पिता की मृत्यु का बदला लेने की बात ही सोचते रहते थे। उनको पता चला कि ड्वायर अब भारत में नहीं अपितु इंग्लैंड में रहता है। ऊधमसिंह ने इंग्लैंड जाने का विचार बना लिया। ऊधमसिंह अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए इंग्लैंड जा पहुँचे। वह किस प्रकार पहुँचे, किसने सहायता की, क्या घटना घटित हुई, इस विषय में अधिक कुछ जानकारी प्राप्त नहीं होती।

ऊधमसिंह सन् 1942 में अपने उद्देश्य में जब सफल हुए, उसके बाद ही उनका नाम लोगों की जिह्वा पर सुनाई देने लगा। उस समय ऊधमसिंह की आयु लगभग 20 वर्ष की रही होगी। इस आयु में जो साहसिक कार्य उन्होंने किया, संसार ने उसे आश्चर्यजनक दृष्टि से देखा। लंदन लाकर वे ड्वायर की गतिविधि पर दृष्टि रखते रहे होंगे, तभी तो अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर सकते थे। ड्वायर के लिए वह दिन अंतिम दिन था तो ऊधमसिंह के लिए अंतिम यात्रा के प्रारंभ का दिन था। उस दिन ड्वायर ब्रिटिश संसद से लौट रहा था कि निर्धारित स्थान पर ऊधमसिंह ने निश्चित लक्ष्य साधर ड्वायर को उसके स्थायी घर के लिए रवाना कर दिया था।

संसद भवन होने के कारण पुलिस निकट ही थी और गोली का धमाका तो सोते को जगा देता है, फिर पहरे पर सन्नद्ध पुलिस को जागने में क्या विलम्ब होता। ऊधमसिंह को तुरंत बन्दी बना लिया गया। इस प्रकार के सुकृत्यों पर अब तक जैसा नाटक खेला जाता रहा है, वह ऊधमसिंह के साथ भी खेलना आरम्भ हुआ। छ: मास तक ऊधमसिंह को हवालाती के रूप में जीवन बिताने के लिए विवश होना पड़ा। उस अवधि में उनको अनेक प्रकार की यातनाएँ दी गईं। ब्रिटिश सरकार जानना चाहती थी कि उनके साथ और कौन-कौन हैं। यदि कोई अन्य होता तब न? कोई था ही नहीं, और होता भी तो ऊधमसिंह जैसे दृढ़व्रती, निष्ठावान व्यक्ति से उस नाम को उगलवा लेना सहज सम्भाव्य भी नहीं था। छ: मास अभियोग चलाने के उपरांत जज ने वही न्याय किया जिसके लिए ब्रिटेन के न्यायालय अथवा न्यायाधीश अब तक प्रसिद्धि पा चुके थे अर्थात् मृत्यु-दण्ड। और निर्धारित तिथि पर न्यायाधीश की आज्ञा का पालन करने वालों ने अपने उस कुकृत्य को सम्पन्न किया।

ऊधमसिंह का सांसारिक जीवन पूर्ण हुआ और वे इस असार-संसार से विदा लेकर अपने पितृलोक को प्रस्थान कर गए। कदाचित् पिता को उन्होंने सूचित किया हो कि वे उनकी नृशंस हत्या का प्रतिकार कर उनसे मिलने के लिए ही वहाँ पहुँचे हैं। अस्तु, ऊधमसिंह, अब बलिदानी वीर ऊधमसिंह के नाम से क्रांति के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गए। (साभार : क्रांति की चिंगारियाँ)

सत्यम् शिवम् सुन्दरम् आर्य समाज

ऐ ऋषि तूं ने सत्यम् शिवम् सुन्दरम् का आर्य समाज को ताज दिया
वैदिक धर्म की पावन गंगा बहा कर स्वयं विष का पान किया।
मानव जाति त्रसित हुई थी, कट पिट रही थी विधर्मियों से
भ्रमित जनों को सत्य मार्ग दिखाकर पावनतम् वैदिक ज्ञान दिया।
तूं ने मिटाया ढ़ोंग पोप पोल, पाखण्ड आडम्बर, अज्ञान, अविद्या को,
सत्य ज्ञान का दीप जला कर **14 रतनों का सत्यार्थ - प्रकाश दिया।**
है सत्यम् शिवम् सुन्दरम् का मेरा आर्य समाज।
नारी जाति को मातृशक्ति बता कर वेद पढ़ने का अधिकार दिया,
विधवाओं को पुनर्विवाह करने का व अछूतों को गले लगा कर सम्मान दिया।
बाल विवाह, बेमेल विवाह, बहु विवाह करने का जम कर विरोध किया,
अनाथों, अबलाओं व पतित जनों को गले लगा कर प्रेम से जीने का अधिकार दिया।
स्वराज्य स्वभाषा, स्वपोषाक व स्वादेश स्वाभिमान जाग्रत कर
स्वतंत्रता प्राप्त करने का राष्ट्र में आवाहन किया।
है सत्यम् शिवम् सुन्दरम् मेरा आर्य समाज।
मिट्टी के पाषाण पत्थर, जड़ पूजा से मुक्त कर एक ईश पूजा सिखाई है ऋषि तूं ने,
निराकार बता कर ईश्वर को सच्ची पूजा अर्चना करना सिखाई है।
झाड़ फूंक, भूत-प्रेत, राहू-केतू से अब लेश-मात्र नहीं डरते है,
ढ़ोंगी-ठग, पाखण्डी, पादरी, मुल्लाओं से अब जरा नहीं घबराते हैं।
है सत्यम् शिवम् सुन्दरम् मेरा आर्य समाज।
पंच महायज्ञों का करने का उपदेश सदा होता है यहां,
16 वैदिक संस्कारों को करने पर जोर दिया जाता यहां।
प्रेम प्यार की गंगा बहा कर मिलजुल कर रहने का संदेश दिया जाता है यहां
है सत्यम् शिवम् सुन्दरम् मेरा आर्य समाज।
बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ देन है आर्य समाज व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की
आर्य समाज है रक्षक कन्याओं का और रक्षक बना है अबलाओं का
इसलिये सब कहते हैं कन्याओं हेतू आर्य समाज देश की शिक्षा व्यवस्था बना है अग्रणी आज
आर्य समाज ने दिये हैं सब भाषाओं के वक्ता, भाई जी जैसे हैं आज यहां प्रखर प्रवक्ता।
इनके भाषण की अनुपम आवाज, सब सभ्य समाजों के बने हैं सर्वजन आज।
हे आर्य समाज, हे आर्य समाज, हे दिव्य सूर्य सम, ज्ञान विस्तारक आर्य समाज।
हे पावन वैदिक संस्कृति के साज, तूं ने किये हैं सब जग उपकारक महानतम् काज।
है सत्यम् शिवम् सुन्दरम् मेरा आर्य समाज।

- बीराज आर्य

पंजीयन संख्या : RAJHIN(RNI)2000/2567
डाक पं. सं. : Jaipur City/264/2018-20

निधन की खबर समाचार पत्रों में

रेत से चित्र बनाने वाली विश्व की एकमात्र कलाकार वीरबाला भावसार का निधन

वीरबाला भावसार श्री सत्यव्रत सामवेदी की पत्नी की बहन थीं

बांसवाड़ा। ताउम्र खादी की दूत बनकर जीवन जीया और खादी के कफन में लिपट कर दुनिया से विदाई ली। स्वतंत्रता सेनानी धूलजी भाई भावसार की पुत्री एवं रेत के चित्र बनाने की क़ला में महारथ हासिल प्रख्यात चित्रकार, खादी दूत प्रो. वीरबाला भावसार का निधन हो गया। उन्होंने बांसवाड़ा में स्थित पैतृक मकान में अंतिम सांस ली। वे 78 वर्ष की थी। उनका अंतिम संस्कार 3 अप्रेल को किया गया। इस दौरान उनकी दो बहनों ने अर्थी को कंधा दिया।

स्वतंत्रता सैनानी स्व. धूल जी भाई भावसार तथा विजया देवी भावसार की कुल पांच बेटियों में डॉ. वीरबाला दूसरे नम्बर की बेटी थी। बेटियों ने उम्रभर खादी पहनने व अपनाने का वचन अपने पिता को दिया था। उनकी बहन कृष्णा भावसार ने बताया कि वीरबाला बचपन से ही खादी को अपनाया।

घर में साबरमती से लाया गया पेटी चरखा आज भी मौजूद है। पहनावे में खादी के अलावा अन्य वस्त्र वर्जित हैं। वहीं घर में भी पहनने, ओढ़ने, कुर्सी, दीवान आदि पर भी खादी का ही इस्तेमाल किया।

यूं खादी को किया आत्मसात- स्वतंत्रता सेनानी भावसार आजादी के आंदोलन के दौरान साबरमती में महात्मा गांधी से मिले थे। उसी वक्त से उनके परिवार ने खादी को जीवन समर्पित कर दिया।

धूलजी पहले कंधे पर खादी लेकर घूमे और बेची, फिर ठेलागाड़ी पर उसके बाद दुकान पर बैठकर खादी को लोगों तक पहुंचाया। उसके बाद से उनका परिवार खादी का हो कर रह गया है।

कला व साहित्य जगत में चर्चित- प्रो. वीरबाला भावसार ने प्राथमिक शिक्षा यहाँ प्राप्त करने के बाद अहमदाबाद से चित्रकला में डिप्लोमा तथा उज्जैन से स्नातकोत्तर करने के बाद राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर से आदिवासी कला विषय में पीएचडी उपाधि प्राप्त की। उनकी राजकीय यात्रा की शुरुआत 1972 में महारानी कॉलेज जयपुर से हुई। जयपुर को अपनी कर्मभूमि बना दिया। यहीं से इनकी सृजन यात्रा भी आरंभ हुई। प्रो. वीरबाला ने अखिल भारतीय स्तर पर कुल 31 तथा देशभर में 27 एकल प्रदर्शनी की। देश तथा प्रदेश स्तर पर कुल 37 कला मेलों, शिविरों में भाग लिया। इटली के केव म्यूजियम में उनके द्वारा बनाया गया रेत चित्र पिछले दो वर्षों से लगा हुआ है। 2018 में कोरिया में आयोजित प्रदर्शनी में उनका चित्र लगाया गया। कला व साहित्य में योगदान के उन्हें अनेकों सम्मान से भी नवाजा गया।

रेत के माध्यम से नियमित चलती रही कला यात्रा

सेंड आर्ट में बने कैनवास दुनियाभर में प्रदर्शित हुए

जयपुर। 'नींद बड़ी गहरी थी, झटके से टूट गई, तुमने पुकारा या द्वार आकर लौट गए। बार बार आई मैं,

द्वार तक न पाया कुछ, बार-बार सोई पर, स्वप्न भी न आया कुछ, अनसूया अनजागा, हर क्षण तुमको सौंपा, तुमने स्वीकारा या द्वार आकर लौट गए।' डॉ. वीरबाला भावसार की यह कविता उनकी यादों को ताजा करती हैं। वरिष्ठ चित्रकार और साहित्यकार वीरबाला भावसार अब हमारे बीच नहीं है, लेकिन उनके क्रिएशन नामचीन चित्रकारों के बीच प्रेरणास्त्रोत रहे हैं। राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर की ओर से अक्टूबर में डॉ. वीरबाला को विशिष्ट साहित्यकार पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया था। वहीं राजस्थान दिवस समारोह के तहत जेकेके में आयोजित आर्ट एग्जीबिशन में उनकी कृतियां हमेशा की तरह सुर्खियां बटोरती थी। वे रेत से कलाकृतियों का सृजन करती थी और उनके सृजन में सौन्दर्य और प्रकृति चित्रण सबसे खास नजर आता था। वरिष्ठ चित्रकार आरबी गौतम ने बताया कि हम क्लासफैलो थे। उन्होंने ट्रेडिशनल विधा से शुरुआत की और इसके बाद सेंड आर्ट में प्रवेश किया। वे हमेशा सीखने में विश्वास करती थी। हमने अहमदाबाद में एक साथ म्यूरल बनाया था, जो डेकोरेटिव फिगरेटिव स्टाइल में थे, वे आज भी बने हुए हैं।

सब्जी बनाने में भी कंपोजिशन होती है

डॉ. जगमोहन माथेडिया 'किराएदार' ने बताया कि वीरबाला भावसार ने मुझे कहा था कि सब्जी बनाने में भी एक कंपोजिशन होती है, मसाला, मिर्च, नमक के प्रयोग से लेकर उसके बनने तक का सफर एक नई कंपोजिशन को तैयार करता है। ये उदाहरण को मैं अपनी क्लास में भी बच्चों से शेयर करता हूं। विनय शर्मा ने बताया कि अकादमी की ओर से आयोजित माउंट आबू और पुष्कर कैम्प में वे शामिल थीं, वे प्रयोगात्मक कलाकर्म में विश्वास रखती थी। अकादमी की तरफ से उन्हें कलाविद् सम्मान भी मिल चुका था।

सिम्पल लिविंग, गांधीवादी थीं

डॉ. विद्यासागर उपाध्याय ने बताया कि हम दोनों बांसवाड़ा से ही हैं और मैं उन्हें बड़ी बहन की तरह की मानता था। जितनी जिंदादिल इंसान थीं, उतनी ही स्पष्ट वक्ता थीं। वे साहित्य और कला को हमेशा साथ लेकर चली हैं। माता-पिता महात्मा गांधी के साथ रहे थे, इसलिए ये भी गांधीवादी थीं और सिम्पल लिविंग में विश्वास करती थीं। रेत के माध्यम से इनकी कला अनवरत चलती रही।

॥ ओ३म् ॥
वेद प्रचार, विश्व शान्ति, राष्ट्रोत्थान एवं सम्पूर्ण क्रान्ति के लिये समर्पित पाक्षिक पत्र
आर्य नीति

सत्यव्रत सामवेदी, सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक
5च-13, जवाहर नगर, जयपुर के लिये हरिहर प्रिन्टर्स, आदर्श नगर, जयपुर से मुद्रित।
सम्पादक मण्डल
घनश्यामधर त्रिपाठी
फोन नं. : 0141-2621859 का. : 2624951
M :9829052697, e-mail: Vishwamaryam@gmail.com
9929804883 Vishwamaryam@rediffmail.com
आर्य समाज, विद्या समिति एवं शिक्षा समिति,
आदर्श नगर, जयपुर के सौजन्य से प्रकाशित
-:: डाक वापसी का पता ::-
आर्य नीति, आर्य समाज, आदर्श नगर, जयपुर-4, राज.

प्रेषक : सत्यव्रत सामवेदी, सम्पादक, आर्य नीति
आर्य समाज, राजापार्क, जयपुर - 4
राजस्थान

प्रेषित : .....

पंजियन संख्या
RAJHIN(RNI)/2000/2567
डाक पंजीयन संख्या
Jaipur City/264/2018-20